भूगोल का महत्व

भूगोल पाठ्यक्रम के अत्यन्त महत्वपूर्ण विषयों में से है। भूगोल का क्षेत्र इतना विस्तृत तथा व्यापक है कि सभी मानव क्रिया-कलापों का भौगोलिक महत्व है तथा सभी पर भूगोल की अमिट छाप मिलती हैं। मनुष्य जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रविष्ट हो, भौगोलिक वस्तु-ज्ञान उसके नित्य क्रिया-कलापों में उपयोगी सिद्ध होता है। मानव का कोई भी क्रिया-कलाप भौगोलिक प्रभाव से अछूता नहीं बचा हैं।

भूगोल के बिना हमारी शिक्षा अधूरी हैं। भौगोलिक ज्ञान के बिना वर्तमान संसार की समस्याओं का समझना कठिन है। चाहे कोई राष्ट्रवादी हो या अन्तर्राष्ट्रीयता में विश्वास रखता हो, चाहे कोई साम्राज्यवादी हो या संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थक हो, भूगोल का ज्ञान इन सभी व्यक्तियों के लिए वर्तमान युग की जटिल समस्याओं को समझने के लिये आवश्यक है।

भूगोल का महत्व भूगोलवेत्तायों ने निम्नलिखित बताया है।

(1) भूगोल हमें मनुष्य और उसके निवास-स्थान (पृथ्वी) के विषय में बताता है।

(2)- अनेक मानवीय समस्याओं की जड़ें पृथ्वी के धरातल से सम्बन्धित हैं। भूगोल हमें उनके उचित तथा किफायतशारी उपयोग तथा समाधान के विषय में पढ़ाता है।

(3)- पृथ्वी का भौगोलिक ढाँचा, प्राकृति तथा सांस्कृति ढाँचो को प्रभावित करता है। आधुनिक संसार में इस तथ्य को समझना अत्यन्त आवश्यक है।

(4)- प्राकृतिक वातावरण तथा मानव-क्रियाओं का अध्ययन करने के कारण यह केन्द्रीय विषय हैं। जैसे मधुमक्खी विभिन्न प्रकार के अगणित पुष्पों से मधु संचय करती है ठीक वैसे ही भूगोल प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञानों की मध्यस्थ कड़ी होने के नाते विभिन्न विषय के रसों रसों का संग्रह करता है, और हमें आवश्यक ज्ञान तथा लाभप्रद ज्ञान प्रदान करता हैं।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल ...

(5) :- बिना भौगोलिक ज्ञान के इतिहास का ~~ज्ञान~~ अध्ययन निर्जीव और अस्वीकार होगा। ~~इतिहास का अध्ययन~~ वास्तव में भूगोल ही इतिहास को जीवन प्रदान करता है। मानव-विकास तथा ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या, बिना भौगोलिक ज्ञान के नीरस तथा अधूरी रह जायेगी। अतः देश का, राष्ट्र का अतीत और वर्तमान समझने के लिए भूगोल अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है।

(6) :- संसार की विभिन्न संस्कृतियों को समझने में भूगोल से सहायता मिलती है। इसकी सहायता से हम विश्व-संस्कृति में विभिन्न स्थानों के निवासियों के योगदान को समझ सकते हैं।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

भूगोल- शिक्षण के उद्देश्य

पाठ्यक्रम के भिन्न-भिन्न विषय किसी-न-किसी सीमा तक शिक्षा के साधारण उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होते हैं। शिक्षा के उद्देश्य ही विभिन्न विषयों के शिक्षण के उद्देश्य हैं। फिर भी प्रत्येक विषय के कुछ ऐसे विशेष उद्देश्य होते हैं, जिनकी पूर्ति उस विषय के द्वारा ही अधिक सीमा तक सम्भव होती है और इन्हीं को ध्यान में रखकर उस विषय का शिक्षण किया जाता है। यह नियम भूगोल के साथ भी है।

प्रोफेसर एस० एल० होल्ट्ज के अनुसार भूगोल - शिक्षण के उद्देश्य:-

① व्यावहारिक उद्देश्य

(i) भूगोल द्वारा स्थल सम्बन्धी ज्ञान।

(ii) भौगोलिक ज्ञान द्वारा व्यवसाय, कृषि तथा उद्योग-धन्धो की उन्नति में सहायता।

(iii) भूगोल के अध्ययन से जीवन परिस्थितियां के भौगोलिक तथ्यों की सूझ।

(iv) समाचार-पत्रों और पुस्तकों में आने-जाने वाले भौगोलिक सन्दर्भो का स्पष्टीकरण।

(v) पर्यटन की इच्छा-जागृति

② सांस्कृतिक उद्देश्य

(i) भूगोल अध्ययन से स्वदेश प्रेम की उत्पत्ति।

(ii) प्राकृति-सौन्दर्य का सच्चा आनन्द, प्राकृतिक दृश्यों, शक्तियों एवं जीवधारियों को समझने तथा सराहने में सहायता।

(iii) 'वसुधैव कुटुम्बकम' का कल्याणकारी पाठ, मनुष्यों में सद्भावना, सहानुभूति तथा सहयोग की भावना जागृत होना।

(iv) मानव और पृथ्वी सम्बन्धी दृष्टि से संसार की वस्तुओं का मूल्यांकन

(v) भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप मानव-जीवन का अनुकूलन।

प्राचार्य
मीरा ... महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्राशिक्षण संस्थान
पाण्डु...र, ताखा, बलिया

भूगोल के ज्ञान की सहायता से हम उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं तथा आधुनिक संसार के साथ प्रगति कर नवीनीकरण में योग दे सकते हैं। साथ ही साथ नवोदित प्रजातन्त्र के लिये सुयोग्य नागरिक बना सकते हैं।—

भूगोल - शिक्षण के उद्देश्यों को निम्नलिखित रूप में कहा जा सकता है;—

1. ज्ञान - प्राप्ति का उद्देश्य :- ।
2. बौद्धिक उद्देश्य :- ।
3. सांस्कृतिक उद्देश्य ।
4. सामाजिक उद्देश्य ।
5. अन्तर्राष्ट्रीयता की साझेदारी और सूझ-बूझ का विकास ।
6. जीविकोपार्जन में सहायता ।

28-08-2020

मीरा ममारक महाविद्यालय
शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया